ईश वंदना

हे ज्योती स्वरूप । हे परम पिता । हे परम आत्मा ।।
हे विश्व के रचईता । हे चल अचल सृष्टि के संचालक ।।

1. यह पूरा विश्व आपके चंरणों मे बसा है । नाचीज लेखक । आपके चंरणों की । मन वचन कर्म । और सभी इंद्रियों । सभी ज्ञानेन्द्रियों से । आपके चंरणों मे गिर कर । साक्षात दंडवत प्रणाम करता है । आपके चंरणों की चंरण वंदना करता है । आपके चंरणों की रज । माथे पर लगाता है
2. यह पूरा विश्व आपका है । आपके बनाय़े विश्व मे । मानव निर्मित । अनेक समस्यायें खडी हो गई है । जिसके कारण मानव । आपको ही भूल गया है । मानव निर्मित समस्याओं के निवारण के लिए । आपने जो रास्ता बनाया है ।
3. उस रास्ते को बनाकर । सार्वजनिक करने के लिए । मुझ नाचीज लेखक को चुना है ।
4. तो यह विश्व आपका । विश्व का जर्रा जर्रा आपका । मानव भी आपके । मानव की समस्यायें आपकी । समाधान भी आपका । कागज भी आपका । कलम भी आपकी । लेखक के तन का जर्रा जर्रा आपका । भारत और विश्व की । समस्याओं का अन्त करना काम आपका । पूरे विश्व की समस्यायें हटाना भी काम आपका । सब कुछ आपका है । सब कुछ आपको ही करना है ।
5. नाचीज लेखक को । लिखने की शक्ती आपने दिया है । नाचीज लेखक कुछ भी नही है ।
6. पूरे विश्व मे । मुझ नाचीज लेखक को । आपने लिखने के लिए चुना । इसके लिए । लेखक के पास । आपका शुक्रिया कहने के लिए शब्द भी नही है । लेखक शब्द हीन है । लेखक आपकी वंदना कैसे करे । लेखक पर कृपा करना ।
7. पूरे विश्व पर कृपा करना । और मानव निर्मित समस्याओं का । अंत करना ।
8. नाचीज लेखक । पूरे विश्व की भलाई करने का आशीर्वाद माँगता है । ताकि नाचीज लेखक । पूरे विश्व का भला कर सके ।

जय विश्व अग्रणी भारत की

मेरा भारत महान

Copy Right Diary Number 3968/2015-CO/L